REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2021

'इदननमम' में चित्रित समस्याएँ

प्रा. डॉ. सुवर्णा नरसू कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक , कला व वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा.

शोध सारांश :

भारतीय समाज मन की विश्लेषक रही मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदननमम' उपन्यास में ग्रामीण तथा आदिवासी जीवन पर औद्योगिकीकरण,पंच वार्षिक परियोजनाओं के परिणाम स्वरूप ;तेजी से बदलते जीवन का सजीव चित्रण किया है । 'इदननमम'में नीजीकरण ,बाजारीकरण के बदलते परिवेश में भूमीहीन किसान ,निम्नवर्ग , आदिवासी , मजदूर एवं स्त्रियों की समस्याओं को वाणी देने के साथ–साथ 'समूह –संगठन'से अपने जीवन समस्याओं का हल ढूंढनेवाली नायिका 'मंदा' का निर्माण किया है । 'इद्न्नम्म' किसान , मजदूर, आदिवासी एवं स्त्री वर्ग को 'अत्त दीप भव' का संदेश देता है ।इसलिये यह कृति हिंदी साहित्य जगात में 'माईलस्टोन' रहेगी ।

बीज शब्द : औदयोगिकीकरण ,यातायात,ग्रसित ,क्रैशर ,व्यसनाधिनता ,शिक्षा ,अस्पताल ,सोलिंग ,रोमानी आदि ।

प्रस्तावना :

नब्बे दशक की ख्यातमान लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का नाम शीर्षस्थ है। 'बेतवा बहती है','चाक','झूला नट','अल्मा कबूतरी' और 'अगनपाखी' आदि उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के साथ –साथ आदिवासी जीवन का यथार्थ चित्रण पाठक को प्रेमचंद की याद करा देता है । 'झूलानट','इद्न्नम्म'और 'अल्माकबूतरी' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा को 'रेणू' की परंपरा को आगे बढानेवाली अधिकारिणी बनाते है । राजेंद्र यादव कहते है – " रेणू के बाद संजीव के साथ –साथ मैत्रेयी अकेली लेखिका है ,जिसने सबसे अधिक चरित्र हिंदी साहित्य को दिये ।"1 'इदननमम' उपन्यास में ग्रामीण तथा आदिवासी समाज की समस्याओं को रेखांकित करते समय दूसरी ओर समस्याओं पर हल ढूँढनेवाले पात्रों का निर्माण कर साहित्यिक उत्तरदायित्व को निभाया है ।

मैत्रेयी पुष्पा का 'इदननमम' (1999)उपन्यास बुंदेलखंड के ओरछा पहाडी में स्थित बेतवा और नर्मदा नदी किनारे स्थित 'अंचल' विशेष को प्रस्तुत करता है। जंगल पहाडों से आच्छादित दूर – दराज में बसे ग्रामीण और आदिवासी लोगों का जीवन औद्योगिकीकरण और पंच वार्षिक योजना के तहत गावं में आये क्रैशर और नहर निर्माण से टूटता – बिखारता चित्रित हुआ है। देश के विकास के लिए समाज में आर्थिक समानात लाने हेतू निर्माण की गई परियोजना ने गावं और आदिवासी जीवन व्यवस्था का ढाँचा तोड कर अनेक समस्याओं को जन्म दिया है-

1) यातायत के लिए कठीण प्रदेश :- भारत देश स्वतंत्र होकर 60 साल बाद भी पहाडी अंचल प्रदेश विकास से काफी दूर रहा। पंचवार्षिक परियोजना का आगमन तो हुआ परंतु ,उचित समय और उचित ढंग से नहीं। क्योंकी ,सरकारी दफ्तर की उदासिनता कारण बनी नजर आती है। परिणाम स्वरूप ; आज भी पहाडी लोगों को असुविधा का सामना करना पडता है। 'इदननमम' की नायिका 'मंदा' बीमार होने पर बीरगावं के डॉक्टर के पास ले जाना पडता है; तब वन –कंदराओं का वर्णन सजीव हो उठा है– "काहें भाइया ,यहाँ तो दूर –दूर तक गावं –गिरमा नहीं। आदमी जात की छाया तक नहीं दिखाई पर रही। लो हमारे भीतर तो पनचक्की – सी चलन लगी है ; घबराहट के मारे ! तुम्हें नहीं डर लगता ?"

" गाडीवान ने पैनिया की कील बैल की पीठ में चुभोते हुये है ss आ ,आ,सुधे। कहते हुये गाडी की गति तेज कर दी। फिर बोला ;"जिज्जी डर – भैं माने तो रहे कैसे ?भगके कहाँ जावे ?"2 यातायत की असुविधा के कारण यहाँ के लोग अपनी विशिष्टता के साथ जिते जीवन संघर्ष को नियती मानकर चलते नजर आते है।

2)औद्योगिकीकरण से ग्रसित अंचल :- 'इदननमम'में स्टोन क्रैशर से ग्रसित 'सोनपुरा 'गावं कथा के केंद्र में आता है। प्रकृति के बीच बसे गावं में सरकारी योजना के तहत पहाडों पर क्रैशर लगे है ,जो गावं का नक्शा हि बदल चुका है। नायिका मंदा और दादी बऊ सात साल बाद गावं आते है ,तो अपने गावं को पहचान नहीं पाते –"बेतवा के किनारे बसा 'पारीछा' गावं में सरिया,मुरम ,गिट्टी और पत्थर ट्रक भर –भरकर आने लगे है। खेतों में होकर सडकें बनाई जाने लगी और इन सडकों पर इंजनों का कर्णभेदी कोलाहल घरघराने लगा। फसले हीं नहीं ,जैसे किसानों के कलेजे रौंदे जाने लगे है। छटपटाने लगा आस –पास के गावं का किसान वर्ग। "3 समाज के विकास हेतू निर्माण की गई परियोजनाओं के आगमन से प्राकृतिक सौदर्य के साथ – साथ गावं आदिवासी अंचल की व्यवस्था को टूटने – बिखरने के लिए बाध्य हो गया। विकास नही तो महाविनाश का आगमन हुआ – "कौन- सा किसाब करेंगे ?दुकान खोलेंगे या खोमचा लगायेंगे ?या कोई रेड्डी ?सब्जी – भाजी बेचेंगे या जूतों की मरम्मत या गोली – बिस्कुट की दुकान ?पीढिंयों से चली आ रही किसानी छोडकर कौन - सा व्यापार चुनें ?निभा भी पायेंगे या नहीं ? कुछ सुझता न था। चतुर से चतुर बुद्धिमान किसान मतिभ्रम में पडा था। "4 अपनी प्रकृति ,संस्कृती एव पृष्ठभूमि से कटता समाज रोजी –रोटी की समस्या से ग्रसित होकर गलत राह पकडने लगा। यहाँ विकास योजना के सिक्के का दूसरा पहलू सामने आता है। पारिवारीक सत्ता –संपत्ति संघर्ष ,दगाबाजी ,स्वार्थ ,चोरी - डकैती,गंदी राजनीति ,व्यसनाधिनता और मजदूर स्त्रियों का शोषण नजर आने लगा है।

3) 'इदननमम' में व्यसनाधिनता की समस्या :- औदयोगिकीकरण के कारण गावं –गावं में कल –कारखाने शुरू हुए। गावं का आर्थिक ढांचा बिखर गया। खेती –बाडी ,प्रकृति के उपज से प्राप्त साधन के बजाय कल –कारखानों में काम करनेवाले ऋणग्रस्त ,रोगग्रस्त मजदूर व्यसनाधिनता के शिकार होने लगे। "क्रैशर क्या आय ,शराब के ठेका संग ले आय। सो तबाह हो रही हैं गृहस्थियाँ। उजड रहे हैं बाल बच्चे !आदमी पी –पीकर बेसुध हुआ जा रहा है। आपकी पुलिस निहत्यों को ही करती है परेशान! बताइये ,किससे कहें ?"5 कल –कारखानों के मालिक ,ठेकेदार स्वार्थ के हेतू शराब के ठेके ,वेश्यालय निर्माण कर

बाल मजदूर ,मजदूर और स्त्रियों का शोषण करते है।जहाँ आर्थिक उन्नति के बजाय जीवन की विसंगतियाँ सामने आती है। खेलने – कुदने की उम्र में बाल मजदूर क्रैशर गिट्टी चुनने का काम करते है; तो स्त्रियाँ पेट की खातिर देह बेचती नजर आती है।

4)'इदननमम' में शैक्षिक समस्या :- 2009 में भारत सरकार ने शिक्षा को मूलभूत अधिकार के रूप में स्विकार किया। शिक्षा एक मात्र साधन है ,जिसके माध्यम से व्यक्ति ,समाज एवं राष्ट्र का सामाजिक,आर्थिक ,एवं सांस्कृतिक विकास हो सकता है ।'सर्व शिक्षा अभियान 'के माध्यम से शिक्षा का प्रचार – प्रसार गावं- गावं चल रहा है। परंतु ,अज्ञान ,अशिक्षा और कुंपमण्डुकता के कारण स्त्री शिक्षा का विरोध एव उच्च शिक्षा की सुविधा न होने पर शिक्षा से दूर रहना पडता है। पांचवी कक्षा से आगे पढने की मशा रखनेवाली मंदा को बऊ कहती है – "बिटियाँ और बालक को होड जिन करो।"6 लडकी होकर पढना आज भी मंजूर नहीं हैं। वही आगे की पढाई के लिए तहसिल न भेजने के कारण पहाडी अंचल के बाल –बच्चे शिक्षा से दूर ही रह जाते है। गंदी राजनीति के चलते गावों का हाल इस प्रकार है – "बातें क्रैशर की ही क्या ,विभिन्न मुद्दों पर हुई ,पोस्ट ऑफिस से लेकर स्कूल ,सडक और अस्पताल तक आ पुहुंची। नरसिंह गढ के सरपंच जी कहने लगे – "इस अंधेर को क्या करें कि सडक के आस – पास के गावों में दो –दो स्कूल और अपने दूर –दराजी गावं मीलों पर एक स्कूल के लिए तरसे हैं।"7 उपन्यास में चित्रित शैक्षिक परीस्थिती देखकर भारत के गावं विकास से काफी दूर रहने का कारण शिक्षा हैं,यह स्पष्ट हो जाता है।

5) 'इदननमम' में आरोग्य की समस्या :- उपन्यास की नायिका 'मंदा'के पिता महेंदर ने अस्पताल बनवाया था,उसके उद्घाटन समारोह में ही उसकी हत्या हो जाती है। गंदी राजनीति की शिकार बने महेंदर की बेटी मंदा 'श्यामली' गावं में पनाह पाती है। सात साल बाद अपने 'सोनपुरा'गावं लौटने बाद अस्पताल खोलने की ठाण लेती है। क्यों की ,सरकार ने यहाँ के पहाडों पर क्रैशर तो लगवाये परंतु ,क्रैशर ने अनेक बिमारियाँ दी। "क्रैशरों ने पहाड काटकर उसके पत्थर नहीं पीसे ,यहाँ के लोगों का जीवन पीस डाला ,राई – रेत कर दी साँसे। "8 क्रैशर के कारण गावों में धूल ही धूल छायी रहती है। पहले के मुकाबले दमा ,साँस की तपेदिक कई गुना अधिक बढ गई। कोई सरकारी डॉक्टर दूर– दराज के पहाडी इलाकों में सेवा देने के लिए तैयार भी नहीं होता ।सरकारी अस्पताल डॉक्टर बीना खाली पडे है। मंदा अपने इलाके के राजासाब को अस्पताल खोलने की बिनंती करती है। क्यों की ,मंदा समज चुकी है ,आज के जमाने में शिक्षा और आरोग्य से बढकर कोई चीज नहीं हो सकती हैं।

6) 'इदननमम' में किसान मजदूरों के शोषण की समस्या :- विज्ञान के अविष्कार ने यंत्रयुग में जी रहे मानव के रोजी - रोटी के साधन छिन लिए है। वही जाति पर आधारित समाज व्यवस्था खत्म होती चली जा रही है। परंतु ,नीचले जाति के लोगों का शोषण करनेवाले जमींनदार ,शेठ - साहूकार और महाजन कल – कारखानदार के मालिक बनकर मजदूर बने किसान ,आदिवासी मजदूर और बाल कामगारों का शोषण कर रहे है।'इदनन -मम' में पहाड का मालिक खलनायक अभिलाख सिंह मजदूरों का शोषण करता है। "वे कहने लगे ,जुरा चढा है तो ?पइसा फँसा पडा है ,उसके लिए क्या करें हम ?सोलिंग नहीं होता तो मशिन में क्या पिसेंगा ?जगा जल्दी ,एक ट्रक सोलिंग निकलेगा। "9 आजादी के बाद जाति व्यवस्था खंडित तो हो गई। परंतु ,उसकी जगह वर्ग व्यवस्था ने ले ली है। जो शोषक और शोषित इन्ह दो वर्गों में विभाजित समाज में मजदूरों का शोषण निरंतर जारी है।

7) 'इदननमम' में स्त्री – पुरुष संबंध एवं बलात्कार की समस्या :- 'इदननमम'में स्त्री – पुरुष संबंध पति –पत्नी ,प्रेमी – प्रेमिका ,विवाह बाह्य संबंध तथा बलात्कार के रूप में चित्रित हुआ है। मैत्रयी पुष्पा ने पति –पत्नी के संबंध में स्नेह ,विश्वास और समर्पण भावना को महत्वपूर्ण माना है। उपन्यास में कुसुमा भाभी को पति यशपाल का प्रेम नही मिलता वह अपने ससुर दाऊजी से अवैध संबंध रखती है। वही मंदा और मकरंद का प्रेम रोमानी प्रेम है। तो वही सगुणा पर ठेकेदार अभिलाख बलात्कार करता

है। भारतीय परंपरा के अनुसार प्रेम भावना को शारीरिक समर्पण के रूप में विवाह के बाद ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकीन मंदा और मकरंद विवाहपूर्व यौन संबंध रखते है। अतृप्त कुसुमा भाभी अवैध संबंध यहा प्रेम भावना जीवन में आनंद उत्पन्न कर आगे बढने की प्रेरणा देनेवाली शक्ति के रूप में चित्रित किया है। आंचलिक उपन्यासों में चित्रित प्रेम के बारे में अमिताभ वेदप्रकाश कहते है –"आंचलिक उपन्यासों में 'प्रेम' एक रोमानी रूप को बहुत महत्व देते हुए भी उसकी अनिवार्य परिणती विवाह में नहीं मानी है।आगे हम देखेंगे 'विवाह 'भी आंचलिक उपन्यासकरों के लिए अनिवार्य नहीं है। प्रेम में उत्कटता ,कल्पना और कोमलता का बराबर बने रहते है। रोमानी प्रेम का आंनद उनके लिए जीवन का एक अंग है ,उसका मुख्य प्रयोजन कभी विवाह नहीं बनता।"10 मंद और मकरंद ,कुसुमा और दाऊजी और सगुणा और भृगुदेव का प्रेम जीवन के आंनद के लिए रोमानी चित्रित हुआ है। वही मंदा और सगुणा पर हुए बलात्कार के माध्यम से पुरुषसत्ताक समाज के भोगवादी वृत्ती को दर्शाया है।संविधानिक स्वतंत्रता के बावजूद भारतीय नारी मन मुताबिक जीवनयापन नहीं कर सकती है ;उसे बार -बार पुरुष के भोगवादी वृत्ती का शिकार होना पडता है।

निष्कर्ष :-

'इदननमम'उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने आजादी के बाद देश के विकास हेतू निर्माण की गई विकास योजनाओं का दूसरा पहलू समाज के सामने लाते समय किसान वर्ग और आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष ,दुख:दर्द को वाणी दी है। किसन और आदिवासी वर्ग दमन ,अत्याचार ,शोषण ,तिरस्कार एव अमानवीय व्यवहार के शिकार होकर अपने अस्तित्व की लडाई लड रहे है। उनके लडाई को मजबूत करने के लिए संगठन की आवश्यकता को चित्रित किया है। 'इदननमम'के किसान और आदिवासी मजदूरों को संगठीत होकर अपनी समस्याओं काहल निकालने की ताकत देनेवाली नायिका 'मंदा 'का निर्माण कर मैत्रयी पुष्पा ने 'अत्त दीप भव' का मूलमंत्र दिया है।

संदर्भ सूची :-

1) सं .विजय बहादूर सिंह,'मैत्रयी पुष्पा :स्त्री होने की कथा',किताबघर प्रकाशन ,नयी दिल्ली , .सं .2011,पृ -60
2) मैत्रयी पुष्पा ,'इदननमम',किताबघर प्रकाशन ,नयी दिल्ली ,पांचवा संस्करण ,2006 ,पृ -90
3) वही – पृ -188
4) वही – पृ – 188
5) वही – पृ – 308
6) वही – पृ -50
7) वही – पृ -232
8) वही – पृ -307
9) वही – पृ – 229
10) वेदप्रकाश अमिताभ ,"आंचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण',वाणी प्रकाशन , ,सं ,1997 ,पृ -60